tricontinental

चीन के ख़िलाफ़ अमेरिका का हाइब्रिड युद्ध

रेड अलर्ट। नं 9

क्या अमेरिका चीन के खिलाफ युद्ध करने की कोशिश कर रहा है ?

पिछले कई दशकों से अमेरिका ने चीन के खिलाफ व्यापार युद्ध छेड़ा हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका की चिंता के दो प्रमुख कारण हैं: 1) व्यापार असंतुलन, जिससे चीन को लाभ होता है और, 2) चीन की प्रौद्योगिकी क्षेत्र (टेक्नॉलजी) में वृद्धि। अमेरिका चीन के खिलाफ कई तरह के हथकंडों का इस्तेमाल करता रहा है। जैसे चीन पर डॉलर के अनुसार अपनी मुद्रा का पुनर्मूल्यांकन करने का दबाव बनानाय चीन की घरेलू बौद्धिक संपदा के विकास को धीमा करने के लिए उस पर बौद्धिक संपदा की 'चोरी' रोकने के लिए दबाव डालना, और चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव को बाधित करना।

अमेरिका ने अब चीनी अर्थव्यवस्था के खिलाफ युद्ध शुरू कर दिया है। हुवेई और जेडटीई को उनके आपूर्तिकर्ताओं और उनके बाजारों से अलग करने की कोशिशें चीन की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेंगी। अमेरिका ने हुवेई और जेडटीई के लिए चिप्स व अन्य सामान बनाने वाली लगभग 152 कंपनियों पर प्रतिबंध लगा दिए हैं। अमेरिका की सरकार की क्लीन नेटवर्क पहल

के नाम पर बढ़े प्रतिबंध अमेरिकी कंपनियों को चीनी क्लाउड सेवाओं और अंडर–सी केबल्स का उपयोग करने से रोकेंगे और चीनी ऐप्स को ऐप स्टोर पर प्रदर्शित नहीं होने देंगे। अमेरिकी सरकार ने दूसरे देशों पर इस अभियान में शामिल होने के लिए दबाव डाला है।

अमेरिकी सरकार ने चीन के पूर्वी किनारे पर अपनी सैन्य कार्रवाइयाँ बढ़ा दी हैं। इन कार्रवाइयों में ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका के क्वाड्रिलैटरल सिक्योरिटी डाइयलोग (क्वाड) को 2017 में पुनर्स्थापित करना, अमेरिका की इंडो– पैसिफिक स्ट्रैटेजी (जिसका साल 2020 का प्रमुख दस्तावेज है, 'रीगेन द एडवांटेज') का पुख्ता करना और साइबर हथियारों सहित नए हथियार तैयार करना शामिल है। इन सब गतिविधियों के साथ साथ चीन (विशेष रूप से हांगकांग, शिनजियांग और ताइवान) के खिलाफ आक्रामक बयानबाजी और कोरोनावायरस महामारी को 'चीनी वायरस' साबित करने की कोशिशें भी जारी हैं। उनके लिए साक्ष्य कोई मायने नहीं रखते, चीन को बदनाम करने के लिए नस्लवादी और कम्युनिस्ट–विरोधी विचार ही काफी हैं।

अमेरिका चीन के खिलाफ अपना दबाव क्यों बढ़ा रहा है?

चीन को उसके तकनीकी विकास के चलते पश्चिम के देशों के मुकाबले पीढ़िगत लाभ मिल सकता है। चीन का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास उसके उच्च शिक्षा क्षेत्र में निवेश करने और चीन में विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करने के लिए आई फर्मों से प्रौद्योगिकी स्थानांतरित करने (टेक्नॉलजी सीख लेने) की देश की क्षमता के कारण संभव हुआ है। 2018 में, चीनी विद्वानों ने पहली बार अमेरिका में अपने सहयोगियों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक लेख प्रकाशित किए, और चीनी कंपनियों ने अमेरिकी फर्मों की तुलना में अधिक पेटेंट आवेदन दायर किए। चीनी तकनीकी कंपनियाँ अब ऐसी वस्तुओं का उत्पादन कर रही हैं जो अमेरिका, यूरोप और जापान के उत्पादों के मुकाबले बेहतर हैं। इनमें 5G, BeiDou (GPS से बेहतर मैपिंग तकनीक), हाई– स्पीड ट्रेनें और रोबोट शामिल हैं।

अमेरिका के दबाव का मुकाबला करने के लिए, चीन ने स्वतंत्र व्यापार और विकास का एजेंडा बनाया। विश्व वित्तीय संकट के बाद से, चीन अमेरिका और यूरोपीय बाजारों पर निर्भरता कम करने के लिए, अपने आंतरिक बाजार को मजबूत बनाने और ग्लोबल साउथ के देशों के साथ रिश्ते बढ़ाने के प्रयास कर रहा है। इन कारणों से चीन ने जो परियोजनाएँ शुरू कीं, उनमें बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स इनिशिएटिव, फोरम ऑन चाइना–अफ्रीका कोऑपरेशन, शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन और चाइना–कम्युनिटी ऑफ लैटिन अमेरिकन एंड कैरिबियन स्टेट्स फोरम शामिल हैं। चीनी सरकार ने एसोसिएशन ऑफ साउथ–ईस्ट एशियन नेशंस (आसियान) पर भी ध्यान देना शुरू कर दिया है। इन गतिविधियों के साथ ही चीनी सरकार ने देश में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम भी जारी रखा है।

चीन ऊर्जा के लिए आयात पर ही निर्भर है। जैसे कि गैस ऑस्ट्रेलिया, कतर और आसियान देशों से आयात होती है। चीन और रूस के बीच 6000 किलोमीटर की 'पावर ऑफ साइबेरिया' पाइपलाइन द्वारा चीन में 38 बिलियन क्यूबिक मीटर प्राकृतिक गैस आएगी। चीन में 90 बिलियन क्यूबिक मीटर गैस की खपत होती है। इस मांग को पूरा करने की दिशा में ये पाइपलाइन एक महत्वपूर्ण कदम है। 2014 में, रूस की बहुराष्ट्रीय ऊर्जा निगम गजप्रोम और चाइना नेशनल पेट्रोलियम कॉरपोरेशन ने 400 बिलियन डॉलर के तीस साल के सौदे पर हस्ताक्षर किए थे।

चीन लगातार पश्चिम द्वारा नियंत्रित व्यापार और विकास संरचनाओं से स्वतंत्र संस्थानों का निर्माण करने का प्रयास कर रहा है। जैसे कि 2014 में एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक की स्थापना। चीन विश्व व्यापार में डॉलर के प्रभुत्व को कम करना चाहता है। डी–डॉलराइजेशन के लिए प्रतिबद्ध चीन ने अमेरिकी डॉलर के अलावा अन्य मुद्राओं में अपने भंडार रखने और व्यापार करने का प्रस्ताव दिया है। यह वॉल स्ट्रीट के दबदबे को चुनौती देने वाला दीर्घकालिक लेकिन अपरिहार्य विकास है। इस दिशा में रूस के साथ चीन का सहयोग खासी ऊँचाइयाँ प्राप्त कर चुका है; रूस और चीन के बीच होने वाले व्यापार का लगभग 50% रूबल और युआन में आयोजित होता है (वैश्विक युआन भंडार का लगभग 25% हिस्सा रूस के पास है)। रूस और चीन दोनों

अपने डॉलर भंडार बेच रहे हैं। जनवरी 2020 में, रूस ने अपने डॉलर भंडार में से 101 बिलियन डॉलर यानी आधा डॉलर भंडार बेच कर, 44 बिलियन डॉलर के यूरो और 44 बिलियन डॉलर के युआन लिए हैं। जबकि, युआन वैश्विक मुद्रा भंडार का केवल 2% है।

नाटो के पूर्ववर्ती विस्तार और क्वाड की स्थापना के खिलाफ, चीन और रूस भी सैन्य और राजनयिक यूरेशियन सुरक्षा ब्लॉक तैयार कर रहे हैं। उनके बीच के हथियार सौदों, सैन्य अभ्यासों और विशेष रूप से बढ़ते कूटनीतिक समन्वय द्वारा इसे समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, रूस और चीन के विदेश मंत्रालयों के प्रवक्ता मारिया जखारोवा और हुआ चुनयिंग ने जुलाई के अंत में कहा कि वे मिलकर चीन और रूस के खिलाफ चल रहे सूचना युद्ध का सामना करेंगे। चीनी राजनयिक अब ज्यादा खरे बयान दे रहे हैंय उन्हें वॉरियर डिप्लोमेट्स कहा जाने लगा है। एक लोकप्रिय फिल्म में 'वुल्फ वॉरियर' दल का एक चीनी सैनिक अमेरिकी नौसेना के किसी पूर्व–अधिकारी के नेतृत्व में काम कर रहे आतंकवादियों के एक समूह को मात देता है।

अमेरिका समझ चुका है कि, चीन गोर्बाचेव की तरह संयुक्त राज्य अमेरिका की इच्छानुसार चीनी मॉडल का आत्मसमर्पण करने को तैयार नहीं है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के खंडित हो जाने की कोई संभावना नहीं है। चीनी मध्यम वर्ग –जो 'रंग क्रांति' का कारण बन सकता है– सरकार बदलने के मूड में नहीं है। वो सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों से संतुष्ट है और देख भी रहा है कि सरकार ने लोगों का जीवन स्तर सुधारा है और (जैसा कि हमारे 'कोरोनाशॉक' अध्ययनों से उजागर हुआ) पश्चिमी देशों की सरकारों के मुकाबले कोरोनावायरस महामारी का बेहतर प्रबंधन किया है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन से पता चलता है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की अगुवाई वाली सरकार पर साल 2003 से साल 2016 के बीच जनता का विश्वास बढ़ा है। इसका मुख्य कारण सरकार द्वारा चलाए गए समाज कल्याण कार्यक्रम हैं और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी व चीन की सरकार दोनों का भ्रष्टाचार रोकने का संघर्ष शामिल है। 93% जनता मौजूदा सरकार को पसंद करती है।

अमेरिकी युद्ध परियोजना के सामने क्या विरोधाभास हैं ?

अपने आर्थिक विकास के कारण चीन उन देशों के पूँजीवादी क्षेत्रों के साथ गठबंधन करने में कामयाब हो पाया है जो पहले अमेरिका के सुरक्षित सहयोगी थे। अमेरिका के मुकाबले ज्यादा विकास सहायता देकर व्यापार सौदों में पश्चिमी फर्मों को पछाड़ने की देश की क्षमता के कारण ऐसा मुमकिन हो रहा है। उदाहरण के लिए फिलीपींस और श्रीलंका के पूंजीपति खेमों ने चीनी निवेश का स्वागत किया गया है।

चीनी सरकार ने देश के अंदर तकनीकी क्षेत्र में अपना हस्तक्षेप बढ़ाया है; सरकार ने प्रौद्योगिकी विकास के लिए 14 अरब डॉलर का निजी और सार्वजनिक फंड दिया है। चीन की शीर्ष चिप कंपनी –सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग इंटरनेशनल कॉरपोरेशन (SMIC) को शंघाई में उसके प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (IPO) में 7.5 बिलियन डॉलर फंड मिला। इस तरह के फंड देने से और देश के वैज्ञानिक विकास के परिणामस्वरूप, चीन जल्द ही अमेरिकी चिप फर्मों से आगे निकल सकता है।

विभिन्न देशों के पूंजीवादी खेमों पर चीन का प्रभाव है। ऑस्ट्रेलियाई खनन कंपनियां चीन द्वारा लौह अयस्क के आयात पर निर्भर हैं। ये कंपनियां कैनबरा पर चीन के खिलाफ अत्याधिक आक्रामक रुख खिलाफ पुनर्स्थापित पुख्ता ज्यादा अख्तियार न करने का दबाव बनाती हैं। सोया, जौ, मांस, फल, गैस और कच्चे खनिज मिलाकर, ऑस्ट्रेलिया का एक तिहाई निर्यात चीन को जाता है। ऑस्ट्रेलियाई सरकार, अपने दूरगामी परिप्रेक्ष्य के बावजूद खनन कंपनियों के अल्पकालिक सरोकारों को ध्यान में रखने के लिए मजबूर है। लेकिन, चीन अभी से ही खुद को सुरक्षित कर रहा है; चीन ने अर्जेंटीना और ब्राजील से सोया और मांस की खरीद बढ़ा दी है, और संभावना है कि आने वाले समय में चीन ब्राजील से खनन किए माल खरीदने लगेगा (ब्राजील की कंपनी वेल चीन में खनन माल ले जाने के लिए बड़े जहाजों का उपयोग कर रही है)।

दूसरी ओर अमेरिकी सेना वेनेजुएला और ईरान और अब चीन के साथ लड़ाइयों में बँटी हुई है। अमेरिकी नौसेना में बीते एक वर्ष में चार सचिव बदले गए हैं; ये ट्रम्प प्रशासन की अराजकता दर्शाता है। इन सब के नतीजतन, अमेरिकी नौसेना ने एक साथ कई युद्ध सँभालने की क्षमता न होने के बारे में शिकायत की है। वहीं चीन अपना रक्षा तंत्र विकसित कर रहा है; चीन ने अपनी साइबर युद्ध तकनीकें मजबूत की हैं, जिनमें अमेरिकी खबरों/संचार को सैटेलाइट से ही बंद करने की क्षमता है और चीन के डोंगफेंग मिसाइल दक्षिण चीन सागर में गश्त कर रहे अमेरिकी नौसेना के जहाजों को नाश्ता कर सकते

tricontinental
Tricontinental: Institute for Social Research

thetricontinental
@thetricontinental
@tri_continental
thetricontinental.org